

## पोथेर पांचाली का सामाजिक एवं साहित्यिक अध्ययन

आदित्य तिवारी\*

tewariaditya8@gmail.com

सन 1913 भारतीय सिनेमा और भारतीय साहित्य के लिए एक उल्लेखनीय वर्ष है। इस वर्ष जहाँ एक तरफ गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर को उनकी महान कृति 'गीतांजलि' के लिए साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ था, तो वहीं दूसरी तरफ दादा साहब फाल्के द्वारा अपनी फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' के जरिये भारतीय सिनेमा की नींव रखी गई थी। यानी जब भारतीय साहित्य विश्व पटल पर प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा था, तब सिनेमा देश में अपने लिए जमीन तलाशने की कोशिश में लगा था। लेकिन आज उक्त दोनों घटनाओं को सौ वर्ष से अधिक का समय बीत जाने के बाद यह स्थिति बनी है कि भारतीय सिनेमा, विशेषकर हिंदी सिनेमा, जहाँ अपना वैश्विक विस्तार कर चुका है, वहीं हिंदी साहित्य बहुधा पुरस्कारों की राजनीति में उलझा, पाठकों से विपन्न होकर, अपने द्वारा ही बनाए गए एक संकुचित दायरे में सिकुड़कर रह गया है। हिंदी साहित्य ने प्रतिष्ठा और पाठक दोनों गंवाए हैं।

इस स्थिति के कारणों में उतरने पर विषयांतर हो जाएगा अतः सार संक्षेप में इतना ही कहना ठीक होगा कि बीते सौ वर्षों में सिनेमा ने जहाँ दर्शकों की अभिरुचि को पकड़ते हुए समय के साथ खुद को विषयवस्तु से लेकर प्रस्तुति-विधान तक निरंतर अपडेट करते आई है, वहीं साहित्य अपनी कथित महानता के दंभ में पुरानी लकीर ही पीटता रह गया। परिणामतः सिनेमा के दर्शकों में निरंतर विस्तार हुआ, तो वहीं साहित्य के पाठक सिमटते गए।

### परिचय:---

विभूतिभूषण बंदोपाध्याय की लेखन की अमरता से बांग्ला भाषी समाज ही नहीं, बल्कि साहित्य में रुचि रखने वाला व्यापक पाठक समाज परिचित है। उनकी 1928 की प्रसिद्ध कृति पोथेर पांचाली का स्मरण समाज की हर एक दृष्टि से कारगर जान पड़ता है। वे बांग्ला साहित्य के उन पुरोधाओं में शामिल हैं, जिनके साथ हम ताराशंकर बोंगोपाध्याय, बंकिमचंद्र चटर्जी, शरदचंद्र, आशापूर्णा देवी, काजी नज़रुल इस्लाम और शंकर को याद करते रहते हैं। अलग से गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को देखना, बांग्ला साहित्य की अमर विरासत के आगे नतमस्तक होने जैसा है। इस अर्थ में भी यह एक असाधारण कृति की तरह उभरती है कि फिल्म का सत्यजित राय ने इसी नाम से एक संवेदनशील फिल्म का निर्माण करके आम जनता किसकी अर्थमयता को विस्तार दिया है।

पोथेर पांचाली जिसका आशय ही 'यात्रा या मार्ग का गीत' है, एक अति साधारण निर्धन लड़के ओपू के जीवन की त्रासदी, आकांक्षाओं, स्वप्न और मोह भंग के साथ पीड़ा की ऐसी पटकथा है, जिसकी अंतःसलिला ध्वनि मार्मिक ढंग से एक किशोर का अंतर्मन उघारती है। उपन्यास में गरीबी का सबसे निम्नतम रूप दिखाया गया है। उपन्यासकार किरदारों को विस्तार देते हुए उन्हें कठोर वास्तविकता के दायरे में लाते हैं। ऐसा

\* हिंदी साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

करते हुए वे समाज के साथ कोई धोखा नहीं रचते, बल्कि बंगाल की पारंपरिक वैभव की परिपाटी को सतर्कता से दूर करते हैं।

‘पोथेर पांचाली’ एक ऐसी फिल्म जिसकी वर्ल्ड सिनेमा में एक खास जगह है। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह हिंदुस्तान की वह पहली फिल्म है जिसे विश्व भर में शहर रा गया। भारतीय समाज की जो वास्तविकता इस फिल्म में देखने को मिलती है, वह हमें दुनिया की जमीनी हकीकत से रूबरू करवाती है। बड़े-बड़े दुख हो या छोटे-छोटे सुख सब कुछ हमें देखने को मिलते हैं, हम पाते हैं कि बच्चों के और बड़ों के संघर्ष कितने अलग होते हैं। पहले बताया जा चुका है कि साहित्यिक कृति को फिल्म में परिवर्तित करने का कार्य सत्यजित राय ने किया, ऐसे बहुत कम लोग होंगे जिन्हें सिनेमा में रुचि होगी और वह सत्यजित राय से अनजान होंगे। यह फिल्म 1955 ई० में आई थी, दुनिया भर के बहुत सारे पुरस्कार और लोगों की सराहना इसे प्राप्त हुई।

### कथावस्तु :---

भारतीय-बंगाली लेखक बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय की पोथेर पांचाली सन 1929 में आई। यह एक परिवार की खोज का अनुसरण करता है जो एक गरीब बंगाल क्षेत्र से अधिक मध्य-उत्तर भारत के काशी/वाराणसी के बड़े शहर में जाकर अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए संघर्ष करता है। यह उस क्षेत्र की घटना है जिसे कभी भारत माना जाता था, लेकिन अब पूर्वी पाकिस्तान और बांग्लादेश हैं। आत्मकथात्मक कहानी को 1955 में सत्यजित रे के निर्देशन में फिल्म के लिए रूपांतरित किया गया था, जो भारत के सबसे प्रमुख फिल्म निर्माताओं में से एक बन गए; फिल्म को अक्सर भारत में कैसाब्लांका (1943) के समकक्ष माना जाता है। सॉन्ग ऑफ द लिटिल रोड के विषयों में घरेलू क्षेत्र का राजनीतिक निर्धारण, पहचान का गठन और गरिमा का रखरखाव शामिल है। सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल कैसे व्यक्तिगत चरित्र को निर्धारित कर सकते हैं, इसके चित्रण के लिए यह उपन्यास भारतीय साहित्य का एक क्लासिक बना हुआ है। मूल रूप से बंगाली में लिखे गए इस उपन्यास को परिवार के सबसे छोटे लड़के अपू ने सुनाया है। उपन्यास में तीन भाग हैं, जो परिवार की यात्रा के प्रत्येक प्रमुख चरण में विभाजित हैं। उपन्यास की शुरुआत बंगाल के निश्चिंदपुर के गरीब गांव में रहने वाले राय परिवार से होती है। परिवार का मुखिया हरिहर राय है, जो एक ब्राह्मण पुजारी है, जो अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए संघर्ष करता है, क्योंकि उसके पास खराब व्यावसायिक कौशल है; वह उम्मीद करता रहता है कि वह एक कवि और विद्वान के रूप में अपना जीवन यापन करेगा। अतीत में, उसका परिवार “ग्राहकों” के लिए धार्मिक अनुष्ठान करके अपना गुजारा करता था। तकनीकी रूप से, इस पेशे से कोई आय नहीं होती थी, लेकिन परिवार को फल, अनाज और (कभी-कभी) रुपये जैसे उपहार मिलते थे।

हरिहर की पत्नी का नाम सरबजया है और उसके दो बच्चे हैं, अपू और दुर्गा। वे एक पचहत्तर वर्षीय दादी इंदिर ठाकरून के साथ रहते हैं, जो अपना ज्यादातर समय उन बेहतर, पुराने सालों के बारे में शिकायत करने में बिताती हैं, जब परिवार के पास बहुत ज्यादा भौतिक संपत्ति थी, न कि सिर्फ कुछ घटती सामाजिक प्रतिष्ठा। सरबजया और इंदिर के बीच अक्सर झड़प होती रहती है और एक बड़ी लड़ाई के बाद सरबजया इंदिर को घर छोड़ने पर मजबूर कर देता है, जिसे इंदिर छोड़ देता है और कुछ ही समय बाद मर जाता है।

हालाँकि परिवार ब्राह्मण है, जो जाति व्यवस्था में सबसे ऊँचा पद है, उपन्यास का ज्यादातर हिस्सा हरिहर द्वारा अपने परिवार को एक स्थिर परवरिश देने की कोशिश पर केंद्रित है। परिवार ने बहुत प्रतिष्ठा खो दी

है, क्योंकि अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में राजनीतिक सत्ता खो दी है और 1930 के दशक में सामाजिक सुधार आंदोलनों ने एक ज्यादा लोकतांत्रिक समाज की मांग की है। पूरे उपन्यास में, मुख्य पात्र गरिमामय दिखने की कोशिश करते हैं, जबकि उनसे धीरे-धीरे भौतिक संपत्ति या सामाजिक सम्मान छीन लिया जाता है। चूँकि हरिहर एक सपने देखने वाला व्यक्ति है, इसलिए परिवार चलाने के रोजमर्रा के मामले सरबजया पर निर्भर हैं। वह रिश्तेदारों से पैसे मांगे बिना स्वाभिमान के साथ आपने घर को चलाना चाहती है। मदद मांगने के प्रति उसका अभिमान अनजाने में उसकी बेटी की मौत का कारण बन जाता है।

हालाँकि परिवार दिखने में गरीब है, लेकिन अपू और दुर्गा बड़े होने में बहुत मजा करते हैं। संस्कृत में निश्चिंदपुर का मतलब है “लापरवाह की भूमि” भाई-बहन को खरगोशों और पक्षियों को देखना, नदियों में खेलना और पेड़ों पर चढ़ना बहुत पसंद है। बड़े होने पर वे एक-दूसरे के बहुत करीब हो जाते हैं। दुर्गा अपू को हर पौधे और पेड़ का नाम सिखाती है। जब उन्हें अपने अमीर चचेरे भाई के फलों के बगीचों में प्रवेश करने से मना किया जाता है, तो वे जंगली जंगल क्षेत्रों का पता लगाने के लिए अकेले ही निकल पड़ते हैं।

अपू दुर्गा की ऊर्जा और उन्मुक्त भावना की प्रशंसा करता है, बावजूद इसके कि वह तमाम सामाजिक बाधाओं का सामना करती है। अपू का चरित्र उसके पिता जैसा है। उसे किताबें और कविताएँ लिखना बहुत पसंद है, और वह अपने सरबजय को महाकाव्य महाभारत पढ़ते हुए बड़े उत्साह से सुनता है। वह एक गरीब माहौल में स्कूल जाना शुरू करता है; उसका शिक्षक भी स्थानीय किराने की दुकान पर काम करता है। इसके बावजूद, वह खुद को एक तेज सीखने वाला साबित करता है। अपनी बहन के विपरीत, अपू बहुत शर्मीला है।

सबसे बड़ी बेटी दुर्गा के पास अपू की तुलना में लापरवाह होने का कम कारण है। दुर्गा को शिक्षा नहीं मिलती क्योंकि परिवार को लगता है कि एक दिन उसकी शादी हो जाएगी। उसे अपू से तीन गुना ज्यादा काम भी करने पड़ते हैं और उसके विपरीत, वह कभी भी काम में ढिलाई नहीं बरतती। एक बार, जब दुर्गा एक पड़ोसी से मिठाई चुराती है और पकड़ी जाती है, तो उसकी माँ, सरबजया, अपनी बेटी को सार्वजनिक रूप से पीटती है। इस सार्वजनिक अपमान से दुर्गा की ईमानदारी प्रभावी रूप से नष्ट हो जाती है, लेकिन सरबजया को यह साबित करने में अधिक सहजता महसूस होती है कि उसने व्यक्तिगत रूप से चोरी को मंजूरी नहीं दी थी और अपनी बेटी के विपरीत, वह एक अच्छी इंसान है।

हरिहर एक यायावर विद्वान के रूप में जीवन शुरू करता है, उसे विश्वास है कि वह इस तरह से अधिक धन कमा सकता है। वह ऐसा नहीं करता है, और परिवार गरीब हो जाता है। उन्हें एक बड़े तूफान से भी निपटना पड़ता है। जब दुर्गा तूफान के परिणामस्वरूप घातक रूप से बीमार हो जाती है, तो गांव में उसकी मदद करने के लिए चिकित्सा आपूर्ति की कमी होती है। सरबजया अपने अमीर, घमंडी रिश्तेदारों से मदद मांगने से इनकार कर देता है। उनकी झोपड़ी बारिश के पानी से टपकने लगती है। दुर्गा, दर्द और तेज बुखार (फिर भी बिना शिकायत) से तड़पती हुई मर जाती है। उसकी मरते समय की इच्छा एक ट्रेन देखना है।

दुर्गा की मृत्यु के कुछ समय बाद, हरिहर को एक अमीर परिवार के लिए एक निजी पुजारी के रूप में नौकरी मिल जाती है। वह अपने परिवार के साथ खुशखबरी साझा करने के लिए गाँव लौटता है। उसके पास अपने दोनों बच्चों के लिए उपहार हैं। जब वह सरबजया को देखता है, तो वह टूट जाती है। वे सभी अपने जीवन को भूलने के लिए गांव छोड़ने के लिए सहमत हो जाते हैं। हालाँकि, अपू को गांव छोड़ने में कठिनाई होती है, क्योंकि उसे लगता है कि वह दुर्गा को छोड़ रहा है।

सॉना ऑफ द लिटिल रोड का समापन परिवार के बाकी सदस्यों के पवित्र शहर काशी के लिए ट्रेन में चढ़ने के साथ होता है। वे सभी मानते हैं कि काशी में उनका भविष्य बेहतर होगा, लेकिन अपू अपनी बहन की मरते समय की इच्छा के बारे में सोचता रहता है कि वह एक दिन ट्रेन में यात्रा करना चाहती है।

रे साब की कहानी कहने की शैली कोमल और गहन दोनों है। वह पात्रों और रिश्तों को विकसित करने में अपना समय लेते हैं, जिसके माध्यम से दर्शक गहराई से जुड़ पाते हैं। उनके संघर्षों और क्लेशों के माध्यम से, हम आशा, सपनों और मानवीय भावना के सार्वभौमिक विषयों को देखते हैं।

**छायांकन और दृश्य :---** पथेर पांचाली एक शानदार दृश्य है। सुब्रत मित्रा की सिनेमैटोग्राफी ने बंगाल की ग्रामीण खूबसूरती को शानदार ब्लैक एंड व्हाइट इमेजरी के साथ कैद किया है। यह फिल्म प्रकृति के भावपूर्ण दृश्यों से भरी हुई है, जिसमें प्रतिष्ठित ट्रेन सीक्वेंस से लेकर मानसून की बारिश के मंत्रमुग्ध करने वाले दृश्य शामिल हैं। फ्रेम कला का एक नमूना है, और सिनेमैटोग्राफी देखने लायक है।

**संगीत और ध्वनि :---** रविशंकर की भावपूर्ण संगीत इस फिल्म में भावनाओं की एक और परत जोड़ती है। सितार की धुन मूड और माहौल को बढ़ाती है, जिससे फिल्म का भावनात्मक प्रभाव और भी गहरा हो जाता है। फिल्म की तरह ही संगीत भी कालातीत और अविस्मरणीय है।

**प्रभाव और विरासत :---** “पथेर पांचाली” ने “अपू ट्रायोलॉजी” की शुरुआत की, जो अपू के जीवन पर आधारित तीन फिल्मों की एक श्रृंखला है। सत्यजीत रे के काम ने न केवल आलोचकों की प्रशंसा बटोरी, बल्कि भारतीय सिनेमा को विश्व मानचित्र पर भी स्थान दिलाया। इसने ‘कान स्पेशल जूरी पुरस्कार’ सहित कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते और भारतीय सिनेमा को वैश्विक दर्शकों से परिचित कराया। यह फिल्म समानांतर सिनेमा आंदोलन का हिस्सा थी। 1958 में क्राउथर न्यूयॉर्क टाइम्स में इस सिनेमा के संदर्भ में लिखते हैं कि – “पथेर पांचाली ने बहुत ही सूक्ष्मता से यह दर्शाया है कि कैसे गरीबी हमेशा प्रेम को खत्म नहीं करती।”

**निष्कर्ष :---**

हम यह देख सकते हैं कि यह फिल्म गरीबी में भी प्यार और खुशियां होने का संदेश देने के साथ – साथ बंगाली संस्कृति के एक समाज का प्रतिनिधित्व करती है। यह फिल्म मानव व्यवहार का सत्यपूर्ण अवलोकन करते हुए भी कोमल और काव्यात्मक है। अंततः मैं यही कहना चाहूंगा कि यह फिल्म एक कलाकार ( बिभूतिभूषण बंधोपाध्याय ) और एक कुशल कारीगर ( सत्यजित राय ) की कालजयी गवाही है।

**संदर्भ ग्रंथ :---**

बंधोपाध्याय, बिभूतिभूषण. (1929). *पथेर पांचाली*. दिल्ली : राजपाल प्रकाशन.

सिंह, मधु, हिंदी साहित्य और सिनेमा एक अंतर्यात्रा.

पथेर पांचाली (1955 फिल्म) सत्यजीत राय द्वारा निर्देशित १९५५ की बंगाली भाषा की फिल्म.

[https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A4%A5%E0%A5%87%E0%A4%B0\\_%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A5%80\\_\(1955\\_%E0%A4%AB%E0%A4%BC%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AE\)](https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A4%A5%E0%A5%87%E0%A4%B0_%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A5%80_(1955_%E0%A4%AB%E0%A4%BC%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AE))

सत्यजीत रे की पांच फिल्मों जो उन्हें भारतीय सिनेमा का सबसे महान फिल्मकार बनाती हैं.

<https://www.ichowk.in/cinema/satyajit-ray-five-movies-which-make-him-great-film-maker-of-indian-cinema/story/1/28076.html>

बंधोपाध्याय, बिभूतिभूषण. (1929). *पथेर पांचाली*. दिल्ली : राजपाल प्रकाशन.

Life, films and filmmaking of Satyajit Ray. <https://satyajitray.org>